वैदिक विज्ञान की ओर .....

11

आज विज्ञान एक टैक्नोलॉजी का आविष्कार करता है, फिर कुछ वर्षों तक उससे होने वाले दुष्प्रभावों पर अनुसंधान करता है। इसके पश्चात् कोई निरापद प्रतीत होने वाली दूसरी टैक्नोलॉजी का आविष्कार करता है, फिर कुछ काल पश्चात् उसके हानिकारक परिणामों की खोज होती है, यही श्रंखला अनवरत चलती रहती है और अरबों-खरबों डॉलर व श्रम का अपव्यय करने के पश्चात् स्टीफन हॉकिंग जैसा वैज्ञानिक कहता है कि अब धरती को छोड़ कर किसी अन्य लोक, अन्य गैलेक्सी में जाने के साधन बनाओ। कोई भी वैज्ञानिक इस समस्या के मूल कारण पर कभी विचार भी नहीं करता।

जहाँ तक मैं समझता हूँ वर्तमान थ्योरिटीकल फिजिक्स अपूर्णता अथवा अनेकत्र पथभ्रष्टता के कारण यह सब हो रहा है, वहीं वैज्ञानिकों के द्वारा ईश्वर व जीवात्मा जैसी सत्ताओं को सर्वथा भुलाना संसार में जीने की पद्धति को दूषित करने का सबसे प्रधान कारण है। अल्प बुद्धि विज्ञान का छात्र वा आधुनिकता के नशे में डूबा कथित प्रबुद्ध, ईश्वर, जीवात्मा, सदाचार, संयम, त्याग, कर्मफल व्यवस्था जैसी मान्यताओं का उपहास करता है। इन्हें पिछड़ेपन का चिह्न मानता है। टी. वी. चैनलों पर बैठा अथवा समाचार पत्रों में कलम चलाने वाला कथित आधुनिक व्यक्ति २१ वीं सदी के ज्वर से पीड़ित होकर न जाने क्या-२ कहता है? मैं ऐसी मिथ्या वैज्ञानिकता के अभिमानी महानुभावों से कहना चाहूँगा कि सबसे बड़ी अवैज्ञानिकता तो ईश्वर व जीवात्मा की सत्ता को नकारना है। हम थ्योरिटीकल फिजिक्स की गहराइयों में जितना अधिक जायेंगे, हमें ईश्वर की सत्ता उतनी ही स्पष्टता से अनुभूत होती जायेगी, परन्तु दुर्भाग्यवश वर्तमान वैज्ञानिकों ने स्वयं को स्वयं की सीमित सामर्थ्य पर आधारित टैक्नोलॉजी व गणित तथा विभिन्न मूल स्थिरांकों की सीमाओं में कैद कर रखा है। वे उनके बाहर बुद्धि ही नहीं लगाते, इसी कारण वे भौतिक विज्ञान की अधिकाधिक गहराइयों में प्रवेश नहीं कर पाते, तब ईश्वर व जीवात्मा के अस्तित्व व कर्मों का बोध कैसे होगा? ध्यान रहे कि ईश्वर व जीवात्मा को मानना ही पर्याप्त नहीं है अपितु इनके यथार्थ वैज्ञानिक स्वरूप को जानना नितान्त अनिवार्य है अन्यथा दूसरे भंवर में फंसना अवश्यम्भावी है।

क्रमशः .....

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक